सारांश खुत्बः जुमः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ि, स्थान मस्जिद मुबारक,यू.के. बयान फर्मूदः 09 मई 2025

मौता नामक युद्ध के परिपेक्ष में सीरत-ए-नबवी ﷺ का बयान तथा वर्तमान युद्ध के हवाले से दुआओं की प्रेरणा।

Mob: 9682536974 E.mail- ansarullah@qadian.in Khulasa khutba-09.05.2025

محلہ احمدیہ قادیان-پنجاب-143516

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ۔ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔ إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- मौता नामक युद्ध की और अधिक घटनाएं इस प्रकार बयान हुई हैं कि हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ी. बयान करते हैं कि मौता के युद्ध वाले दिन मेरे हाथ से नौ तलवारें टूटीं और केवल एक यमनी चौड़ी तलवार ही मेरे हाथ में रह गई। इस कथन से पता चलता है कि मुसलमानों ने मुशरिकों की ख़ूब हत्या की थी, अन्यथा वे मुशरिकों से न बच सकते थे। मुसलमानों की संख्या तीन हज़ार जबकि मुशरिकों की संख्या दो लाख से अधिक थी।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. फ़रमाते हैं कि जो कठिन परिस्थितियाँ होती हैं उनको कुछ लोग समझते हैं एवं कुछ लोग नहीं समझते तथा इस बात की आवश्यकता होती है कि दूसरे लोग जो सचेत हैं, उन्हें वे समस्याएं समझाई जाएं चाहे इस कारण से कि वे स्वंय विचार नहीं करते अथवा उनका दिल किसी पाप के कारण ख़ुदा की कृपा प्राप्त करने के लिए तय्यार नहीं होता। ये कठिन समस्याएं सामान्यतः दो प्रकार की होती हैं। एक ज्ञान से सम्बंधित समस्याएं जो सूक्ष्म दर्शन शास्त्र पर आधारित होती हैं, उदाहरणतः तौहीद है, उसका इतना भाग तो प्रत्येक व्यक्ति समझ सकता है कि ख़ुदा एक है, किन्तु आगे ये आध्यात्मिक सूक्ष्म बातें कि किस प्रकार ये इंसान की हर एक क्रिया पर ख़ुदा तआला की तौहीद का प्रभाव पड़ता है, इसके लिए एक विवेकशील व्यक्ति की आवश्यकता होगी और ये विषय दूसरों को समझाने के लिए कोई विद्वान चाहिए। हर एक व्यक्ति ये सूक्ष्म बातें नहीं निकाल सकता, परन्तु इतनी बात अवश्य समझ लेगा कि क़ुरआन करीम दूसरे ख़ुदा को स्वीकार नहीं

करता। दूसरे ये समस्स्याएं ऐसे अर्थों के सम्बन्ध में पैदा होती हैं जो ज्ञान के सम्बन्ध में तो न हों किन्तु उस भाषा में बयान की गई हों जिसे तशबीह अथवा इस्तिआरा कहते हैं। साधारण व्यक्ति उस भाषा को न जानने के कारण इसका ऐसा अर्थ कर लेता है जो वास्तविकता के अनुकूल नहीं होता। उदाहरणतः रसूले करीम स. के ज़माने में एक घटना हुई, जब शाम देश के युद्ध में रसूले करीम स. ने हज़रत जाफ़र रज़ी. की शहादत पर फ़रमाया– जाफ़र पर तो कोई रोने वाला नहीं। आप स. का अभिप्रायः यह कदापि नहीं था कि लोग जाकर रोएं, बल्कि यह दुःख को अभिव्यक्त करने का संकेत था कि हमारा भाई भी मारा गया और हम धैर्य रख रहे हैं। परन्तु अंसार ने इस वाक्य को शाब्दिक अर्थ में लेकर महिलाओं को हज़रत जाफ़र रज़ी. के घर भेज दिया जिन्होंने वहाँ रोना धोना शुरू कर दिया। जब आप स. को इसकी जानकारी मिली तो आप स. ने फ़रमाया कि मेरा यह अभिप्रायः तो नहीं था। अतः एक व्यक्ति गया और उसने उन्हें रोका और उसने आँहज़रत सलल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में वापस आकर निवेदन किया कि वे मानती नहीं बात मेरी, तो आप स. ने फ़रमाया– उनके सिरों पर मिट्टी डालो, अर्थात उन्हें छोड़ दो, वे स्वंय चुप हो जाएँगी। परन्तु एक व्यक्ति ने इस बात को भी शाब्दिक अर्थों में लेकर वास्तव में मिट्टी डालना शुरू कर दी। हज़रत आयशा रज़ी. ने उसे डांटा कि तू ने बात को समझा ही नहीं।

अल्लामा इब्ने कसीर की किताब अल्-बदायः वन्नहायः में मौता के युद्ध में शहीदों का वर्णन करने के बाद लिखा है कि उनकी संख्या बारह थी। कुछ रिवायतों में शहीदों की संख्या अधिक भी बयान हुई है, परन्तु यह एक अत्यधिक महान चमत्कार है कि दो सेनाएं आमने सामने हों, जो ख़ुदा के लिए लड़ रहा हो उसकी संख्या तीन हज़ार हो जबकि दूसरी विरोधी सेना की संख्या दो लाख हो, फिर भी मुसलमानों के केवल बारह अर्थात बहुत कम संख्या में शहीद हुए और मुशरिकों की भारी संख्या नरक को प्राप्त हुई।

फिर एक सैन्य अभियान का वर्णन है, यह युद्ध अभियान हज़रत अमरू बिन अलआस कहलाता है, यह सरिय्या जमादिस्सानी 8 हिजरी में हुआ। इब्ने इस्हाक़ के अतिरिक्त सब इस पर सहमत हैं कि यह सरिय्या मौता नामक युद्ध के बाद हुआ और मौता का युद्ध जमादिस्सानी 8 हिजरी में हुआ था। इस सरिय्ये का कारण यह हुआ कि रसूलुल्लाह स. को सूचना मिली कि बनू क़ज़ाअह का एक दल मदीने के आस पास आक्रमण करने के लिए जमा हो रहा है। उनको ध्वस्त करने के लिए रसूले करीम स. ने अमरू बिन अलआस रज़ी. को रवाना फ़रमाया। आप स. ने उनके नेतृत्व में महाजिर तथा अंसार का एक 300 लोगों संयुक्त सैन्य दल तय्यार किया, जिसमें तीस घुड़ सवार थे। आप स. ने हज़रत अमरू रज़ी. के लिए एक सफ़ेद रंग का झंडा बनाया और साथ ही एक काले रंग का झंडा भी दिया। आप रज़ी. युद्ध करने में विशेष रूप से अभ्यस्त थे और लड़ाई की विधि में भी निपुण थे और रसूलुल्लाह स. ने उन्हें युद्ध में निपुण होने के कारण अमीर बनाया था।

इसलाम की सेना आगे बढ़ी, यह रात को यात्रा करती थी और दिन के समय छिप जाती थी, यहाँ तक कि ये हिज़ाम नामक क़बीले के सलासल नामक स्रोत के निकट पहुँच गई। इस कारण से

इसको सरिय्या ज़ातुल सलासल भी कहा जाता है। स्रोत के निकट पहुचने पर मुसलमानों को पता चला कि दुश्मन की सेना अत्यधिक विशाल है। हज़रत अमरू रज़ी. ने और अधिक सहायता के लिए हज़रत राफ़े बिन मकीस रज़ी. को रसूलुल्लाह स. की ओर भेजा। आप स. ने हज़रत अबू उबैदः बिन अल-जर्राह रज़ी. के लिए झंडा तैयार किया तथा दो सौ महाजिर एवं अंसार की सेना उनके साथ रवाना की। हज़रत अबू बकर रज़ी एवं हज़रत उमर रज़ी. भी उनमें शामिल थे। आप स. ने हज़रत अबू उबैदः रज़ी. को रवाना करते हुए नसीहत फ़रमाई कि पहुँचने के बाद हज़रत अमरू के साथ शामिल हो जाएं और एक ही सेना का रूप बन जाएं एवं आपस में मतभेद न करें।

अतएव इसके विस्तार में लिखा है कि मुसलमान वहाँ से चल पड़े और दुश्मन के इलाक़े में पहुचं कर उसे पीस डाला और उस पर ग़ालिब आ गए, यहाँ तक कि जब मुसलमान उस जगह पहुंचे जहां उन्हें दुश्मन के जमा होने की ख़बर मिली थी तो दुश्मन मुसलमानों के आने की ख़बर पाकर भाग गए और तितर-बितर हो गए। मुसलमानों ने उनका पीछा किया तो दुश्मन के एक छोटे से दल से उनका मुक़ाबला हुआ, जिसपर उन्होंने हमला करके उन्हें पराजित कर लिया तथा शेष सब भाग गए।

फिर सरिय्या है हज़रत अबू उबैदः बिन अल-जर्राह रज़ी, यह सरिय्या रजब 8 हिजरी में हुआ इस सैन्य अभियान के अन्य नाम भी हैं, इस सरिय्ये को सरिय्या सैफ़ुल बह्र भी कहा जाता है। सैफ़ुल बह्र का अर्थ समुद्र का किनारा होता है। इस सरिय्ये में चूंकि सहाबी अहमर नामक सागर के किनारे पर जाकर ठहरे थे इस लिए इसे सरिय्या सैफ़ुल बहर कहा जाता है। इस सेना को पत्ते खाने वाली सेना इस लिए कहा जाता है कि चूंकि इस सैन्य अभियान में एक समय ऐसा भी आया था कि सहाबा रज़ी. वृक्षों के पत्ते खाने पर विवश हो गए थे। इस सरिय्ये के अमीर हज़रत अबू उबैदः बिन अल-जर्राह रज़ी. थे। रसूलुल्लाह स. ने उन्हें तीन सौ महाजिर और अंसार सहाबा रज़ी. की सेना देकर बनू जुहैनियः की एक शाखा की ओर भेजा। इस सेना में हज़रत उमर रज़ी. भी शामिल थे। इस सरिय्ये का उद्देश्य यह बयान किया जाता है कि मक्का के क़ुरैशियों का एक यात्री दल जो अनाज लेकर समुद्र के किनारे किनारे शाम देश से मक्का की ओर जा रहा था, उस पर जुहैनियः के एक क़बीले की ओर से हमले की सम्भावना थी। यह हुदैबियः की सन्धि का ज़माना था और चूंकि जुहैनियः आन्हुज़ूर स. के दोस्त थे इस लिए आप स. ने दूरदर्शिता से काम लेते हुए एक सुरक्षा दल सहायता के रूप में उनकी ओर भेज दिया ताकि शाम देश से आने वाले क़ुरैश के यात्री दल से छेड़ छाड़ न हो और क़ुरैश को शान्ति भंग होने तथा सन्धि विच्छेद होने का बहाना न मिल जाए। इससे पता चलता है कि ये सहाबी रज़ी. किसी से लड़ने के लिए नहीं गए थे, इस लिए पन्द्रह से अधिक दिन तक किसी लड़ाई का वर्णन नहीं मिलता।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बीच जो युद्ध की स्थिति है उसके बारे में बहुत दुआ करें कि आपस में सन्धि एवं शान्ति का वातावरण स्थापित हो जाए क्यूंकि युद्धों में आजकल जो हथियार उपयोग में लाए जाते हैं उनसे नागरिक भी मारे जाते हैं और मारे जा रहे हैं, अब जो युद्ध की नई स्थिति बन रही है। अतएव दुआ कानी चाहिए कि दोनों पक्ष सन्धि करने पर तय्यार हों और बड़ी हानि से बच जाएं। इस हवाले से यह बात भी याद रखनी चाहिए कि आजकल

सोशल मीडिया पर अथवा इन्टरनेट के और जो साधन हैं, इलैकट्रिक मीडिया जो भी है, सन्देश साधन हैं, उन पर हरएक बड़ी स्वतंत्रता से टिप्पणी कर देता है और अपनी इच्छा से जो चाहे लिख देता है, जिससे लाभ कम और हानि अधिक है। अपनी ओर से बड़ी अभिव्यक्ति हो रही होती है कि हम क्या चाहते हैं। अहमदियों को इससे से बचना चाहिए क्यूंकि यह अभिव्यक्ति जो है इसका हित कम तथा अहित अधिक है और यदि किसी को सन्देश देने की अधिक इच्छा है तो अमन एवं सलामती का सन्देश दें।

हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने भी अपने जीवन के अन्त में जो "पैग़ामे सुलह" पत्रिका लिखी थी उसमें भी आप अलै. ने यही सन्देश दिया था, शान्ति एवं सन्धि का पैग़ाम था। इसलिए इसे हर अहमदी को याद रखना चाहिए और इसी के लिए प्रयास करना चाहिए। अल्लाह तआला निर्दोष लोगों के प्राणों को बचाए, सबको। लगता है कुछ बड़ी शक्तियां इसे हवा देने की चेष्टा कर रही हैं, वे चाहती हैं कि दोनों पक्ष लड़ें एवं कमज़ोर हों और उनके अस्त्र शस्त्र भी बिकें, अल्लाह तआला इनके उपद्रव से भी बचाए। इसी प्रकार मध्य पूर्व की जनता के लिए भी दुआ करें। अल्लाह तआला उनके लिए भी सुविधाएँ पैदा करे और वे शान्ति के साथ अपने देश में रह सकें, परन्तु प्रत्यक्षतः ऐसा लगता है कि शान्ति की कोई सम्भावना नहीं है बल्कि प्रयास यही है कि किसी प्रकार इनको यहाँ से निकला जाए और इसमें सारी बड़ी शक्तियां शामिल हो रही हैं। मुस्लिम देशों को अल्लाह तआला बुद्धि दे और वे एक हो जाएं यदि वे एक हो जाएं तो अनेक समस्स्याओं का समाधान हो सकता है।

यदि विश्व युद्ध हुआ तो कुछ लोगों का, कुछ देशों का विचार ग़लत है कि वे बच जाएंगे यह सबको अपनी लपेट में ले लेगा। अतः इस कुधारना से हर एक को बचना चाहिए, अल्लाह तआला सबको सुरक्षित रखे, अतएव इसका समाधान जैसा कि मैं सदेव कहता हूँ, केवल एवं केवल यही है कि ख़ुदा तआला की ओर झुकें और यही एक रास्ता है जो इनको बचा सकता है, इसके अतिरिक्त अन्य कोई रास्ता नहीं, अल्लाह तआला सबको इसकी तौफ़ीक दे।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ
يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ،
عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, सम्पर्क अनुवादक-9781831652

टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब- 18001032131